A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिले में नानकचारा परंपरा में लोकगीतों की झलक

Harish Kumar[1], Dr. Vishwas Sant[2]

[1] Research Scholar, Department of Instrumental Music (Sitar/Violin), Faculty of Performing Arts, The Maharaja Sayajirao University, Vadodara
[2] Guide/Associate Professor, Department of Instrumental Music (Sitar/Violin), Faculty of Performing Arts, The Maharaja Sayajirao University, Vadodara

Read the Article Online

OPEN ACCESS

Cite this Article

Published on 21 June, 2026

Kumar, H., Sant, V. (2026). himachal pradesh ke bilaspur jile mein naankachara parampara mein lokgeeton ki jhalak. Swar Sindhu, 14(1), 423-427.

सार

हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिले में अनेक सी परंपराएं प्रचलित है जिनमें से एक है नानक चारा परंपरा। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट होता है कि ऐसे रीति रिवाज या ऐसी परम्परा जो कि नाना-नानी या मामा-मामी (ननिहाल वालों) की तरफ से निभाई जाती है वह नानकचारा परम्परा कहलाती है। नानक चार परंपरा में लोकगीतों का बहुत महत्व रहता है या यूं मानों की लोकगीतों के बिना यह परंपराएं या रीति रिवाज अधूरे से माने जाते नानकचारा का अर्थ लड़की के मायके पक्ष अथवा उनके बच्चों के ननिहाल पक्ष से लिया जाता है। जब बच्चा पैदा होता है तो उसे नाना-नानी या मामा-मामी उसके लिए कपड़े, कंगनु, खिलौने, पालना इत्यादि लेकर आते है। यह ऐसे रीति-रिवाज है जो ननिहाल वाले निभाते है। इन रीति-रिवाजों को निभाते समय संस्कार गीतों को भी गाया जाता है। इसी प्रकार बच्चे के मुण्डन, कर्णभेद, जनेऊ व विवाह संस्कार में भी ननिहाल पक्ष की पूरी भागीदारी रहती है। इन सभी कार्यों के लिए अलग-अलग लोकगीत भी प्रचलित है। यह लोकगीत यहां की समस्त संस्कृति को बचाए वह बनाए हुए हैं नानक चार परम्परा न केवल लोक गायन और वादन की झलक को प्रस्तुत करती है बल्कि समाज की आस्था लोक संस्कार और संस्कृति को भी अभिव्यक्त करती है।

***मुख्य शब्द**: नानकचारा, परम्परा, संस्कृति, लोकगीत, रीति-रिवाज।*

प्रस्तावना

हमारे संस्कार व परम्पराएं लोक संस्कृति का अभिन्न अंग है। इन परम्पराओं के माध्यम से ही मानव अपनी भावनाओं को लोकगीतों में लयबद्ध करके मुखरित करता है। परम्पराओं के बिना संस्कृति निष्प्राण है। हमारी संस्कृति हमारे व्यवहार में झलकती है। रामधारी सिंह दिनकर जी भी कहते हैं कि संस्कृति जीवन जीने का एक तरीका है। पह तरीका एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को विरासत के रूप में दिया जाता है। इसे सुरक्षित रखना प्रत्येक पीढ़ी की जिम्मेवारी है। लोक गीत प्रायः लोक में गाये जाने वाले गीत हैं, जिनमें स्वाभाविकता और प्राकृतिकता जैसी विशेषताएं होती हैं। संस्कृति के विभिन्न पक्ष लोकगीतों में स्पष्ट रूप से झलकते हैं। इसलिए प्राचीन संस्कृति के संरक्षण और विकास के लिए लोकगीतों सम्बन्धी अध्ययन की आवश्यकता है। हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिले में प्रचलित नानक चार परंपरा में लोकगीतों की परम्परा कितनी प्राचीन है यह वहां के प्राचीन लोकगीतों से ही आभास हो जाता है। ये लोकगीत पारम्परिक सांस्कृतिक ढांचे को बनाये रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

शोध पद्धति

हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिले की नानकचरा परंपरा एक महत्वपूर्ण लोक-सांस्कृतिक एवं संगीतिक धरोहर है। वर्तमान समय में इस परंपरा के बारे में प्रामाणिक एवं व्यवस्थित शोध सामग्री सीमित मात्रा में उपलब्ध है। इस परंपरा के गायन, वादन, सामाजिक महत्व तथा सांस्कृतिक योगदान को समझने और संरक्षित करने की आवश्यकता ने इस विषय के प्रति शोध प्रवृत्ति उत्पन्न की। नानकचरा परंपरा के विभिन्न पक्षों का अध्ययन कर इसके ऐतिहासिक, सामाजिक एवं संगीतिक स्वरूप को उजागर करना तथा भावी पीढ़ियों के लिए इसका दस्तावेजीकरण करना इस शोध की प्रमुख प्रेरणा है। प्रस्तुत शोध अध्ययन हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिले में प्रचलित नानकचरा परंपरा में निहित लोकगीतों के अध्ययन पर आधारित है। इस शोध में गुणात्मक , वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। शोध हेतु आवश्यक तथ्यों का संकलन प्राथमिक तथा द्वितीयक स्रोतों से किया गया है।

प्राथमिक स्रोतों के अंतर्गत नानकचरा परंपरा से जुड़े लोकगायकों, वादकों, कलाकारों तथा स्थानीय बुजुर्गों से साक्षात्कार लिए गए हैं। साथ ही नानकचरा परंपरा के अंतर्गत गाए जाने वाले लोकगीतों का प्रत्यक्ष अवलोकन एवं श्रवण कर उनकी विषयवस्तु, प्रस्तुति शैली तथा संगीतिक विशेषताओं का अध्ययन किया गया है।

द्वितीयक स्रोतों के रूप में पुस्तकों, शोध-पत्रों, शोध-प्रबंधों, पत्र-पत्रिकाओं तथा उपलब्ध साहित्य का अध्ययन किया गया है। संकलित सामग्री का विश्लेषण कर नानकचरा परंपरा में प्रचलित लोकगीतों की सांस्कृतिक, सामाजिक एवं संगीतिक विशेषताओं को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। इस शोध के माध्यम से नानकचरा परंपरा के लोकगीतों के संरक्षण, संवर्धन तथा सांस्कृतिक महत्व को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

हिमाचल प्रदेश वह बिलासपुर जिले की एक झलक

दूर पर्वतों की ओट में सांझ का ढलता हुआ सूरज, कोयल का मधुर संगीत, श्वेत हिम शिखरों से सुसज्जित, ऊँचे घने देवदार व स्वच्छे कलकल करते झरने, छलछल नदियों की मादकता से भरपूर, देवभूमि के नाम से कहा जाने वाला अतिसुन्दर एवं मनमोहक स्वर्णिम भूखण्ड जो कैलाश पर्वत के आँचल में विराजमान है वह है मेरा "हिमाचल प्रदेश"। हिमाचल प्रदेश के बारह जिलों में से ही एक है, सतलुज की गहराई से लेकर बंदला की ऊँची-ऊँची पहाड़ियों की ऊँचाइयों तक प्राकृतिक सम्पदा का धनी "बिलासपुर"। जिला बिलासपुर पर्वत और समतल के मध्य प्रकृति द्वारा स्थापित किया गया एक रम्य सेतु है। यहाँ का जनजीवन पहाड़ी और मैदानी दोनों क्षेत्रों की विशेषताओं को समेटे हुए है। हिमाचल प्रदेश का बिलासपुर जिला मेरी जन्म भूमि है। यहाँ की लोक संस्कृति मेरे जीवन का अंग चन चुकी है। बिलासपुर जनपद न केवल शून्य सौन्दर्य समन्वयात्मक भारतीय संस्कृति का प्रतीक है, अपितु यह अपने विचित्र लोक संगीत के कारण भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में भी एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इस जनपद के कण-कण में संगीत दृष्टिगोचर होता है और ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ के जनसाधारण का जीवन लोक संगीत व परम्पराओं के बिना शुन्य अर्थात् अपूर्ण सा है। बिलासपुर के जनजातीय सांस्कृतिक जीवन के विभिन्न अंग रीति-रिवाज, वेशभूषा, त्यौहार, परम्पराएँ, धर्म, मेले, लोकगीत, लोकनाट्य, लोकनृत्य, भाषा, एवं जनजीवन सभी अपनी विशेषताओं को लिए हुए है। अपनी प्राचीन परम्पराओं और सांस्कृतिक जीवन के कारण यह जिला प्रदेश भर में ही नहीं बल्कि देश भर में भी अपना एक विशिष्ट स्थान बनाए हुए है।

नानकचारा परम्परा

मानवीय संस्कृति और नदी घाटी सभ्यताओं के उद्गम और विकास के साथ-साथ परम्परा ने जन्म लिया। नानकचारा परम्परा प्राचीन काल से ही संस्कारों के रूप में सहस्राब्दियों से जनमानस में अपनी पैठ बनाए हुए है। बचपन से जीवनपर्यंत, ये सभ्य और शिक्षित आदमी के जहन में महफूज रही है। नानकचारा परम्परा हिमाचल के अन्य क्षेत्रों की तरह बिलासपुर में भी बहुत पुरानी है तुलनात्मक दृष्टि से और भी ज्यादा सघन और सदियों से चले आ रहे लोकाचार में समाहित। प्राचीन काल से ही नानकचारा से जुड़े लोकगीत केवल लोकरंजन का साधन मात्र नहीं थे। लोगों को अपने रीति-रिवाजों, परम्पराओं और सामाजिक संस्कारों के ज्ञान से परिचित करना और सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करना भी उसका अन्यतम उद्देश्य था। इन्हीं में से थे उनके सुखदुख, उनकी सम्वेद्य भाव दुनिया। नानकचारा परम्परा जो आरम्भ में कद्रतन सीमित थी अब सचमुच एक बड़े प्रेक्षागृह में बदल गयी है। नानकचारा वास्तव में नानका है जिसे हरियाणवी हिन्दी कोश में इस प्रकार स्पष्ट किया गया है :-

"नानका नाना के अंश, स्वभाव या प्रकृति से प्रभावित या सम्बन्धित, नाना से सम्बन्धित नाना का परिवार"।[2]
"राजपाल हिन्दी शब्दकोष में नानका को ननसार व ननिहाल के अर्थ में भी बताया गया है"।[3]

इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए कहा जा सकता है कि नानकचारा परम्परा का स्वरूप असल में मातृपक्ष की तरफ से निभाए जाने वाले रिवाज व इनमें गाए जाने वाले लोकगीतों के द्वारा निर्मित होता है।

नानकचारा परम्परा में लोकगीतों का संगीतिक पक्ष

जहाँ संगीत भारत की समृद्ध सांस्कृतिक सम्पत्ति का एक प्रमुख अंग है, वहीं भारतीय लोक संगीत भी लाखों साधारण व्यक्तियों की बहुमूल्य सम्पत्ति है। लोक संगीत में से ही कुछ सामान्य सिद्धान्तों का संचयन करके उससे संगीत के शास्त्र का निर्माण किया जाता है और फिर उस समृद्ध संगीत को परिष्कृत और स्थायित्व प्रदान कर दिया जाता है। जिस प्रकार हमारे धार्मिक ग्रंथों में जन्म से लेकर मृत्यु तक 16 संस्कारों का वर्णन है। इस तरह बिलासपुर जिले में प्रचलित जन्म, नामकरण, मुण्डन, जनेऊ तथा विवाह संस्कारों में नानकचारा परम्परा को निभाते समय नाना के परिवार (नानी, मामा, मामी, मासी, बुआ) के लिए अनेक लोकगीत भी गाए जाते है, जिनका संगीत की दृष्टि से अपना ही एक विशेष महत्त्व है। बिना लोक संगीत के जीवन जिस प्रकार निष्प्राण है उसी प्रकार इन परम्पराओं को निभाते समय इन लोकगीतों का ना होना अशुभ या अधुरा माना जाता है। बिलासपुर में प्रचलित संस्कारों में नानकचारा परम्परा का महत्त्व और इससे जुड़े हुए लोकगीतों का वर्णन इस प्रकार से है :-

“हो मेरे न्देइये जो नचाने रा चौ
गीगे नानू नानी आवेगी गीगे क्या क्या ल्यावेगी

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) । Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

सिरा जो टोपू ल्यावेगी गला जो झग्गु ल्यावेगी
हत्था जो कंगणु ल्यावेगी पैरां जो चान्जर ल्यावेगी
चांजर छणमण छणकेगी गीगा दूड बुड नाच्चेगा [4]।"

यह लोकगीत औरतों के द्वारा नवजात शिशु के ग्यारह दिन के हो जाने पर गया जाता है। उस समय बिलासपुर में यह रिवाज है कि बच्चे के नाना-नानी या मामा-मामी बच्चे के लिए बहुत सी चीजें उपहार स्वरूप लाते हैं। जैसे सर के लिए टोपू अर्थात टोपी, गला जो झग्गु अर्थात कमीज, हत्था जो कंगणु अर्थात हाथ के लिए चांदी के कंगन और पैरों जो चान्जर अर्थात पैरों के लिए पायल लेकर आते हैं। इसी प्रकार से जब किसी लड़के या लड़की की शादी होती है तो शादी के कपडे जूते सभी चीज़े लेकर नानी का पूरा गाँव उनके (अपनी बेटी के) घर जाता है जिसे नानकचारा कहते हैं। जिस गांव में शादी होती है दोनों गांव एक दूसरे का पूरे धूम धाम से लोकगीतों से एक दूसरे का स्वागत करते हैं व प्रतियोगिता का माहौल स्त्रियों में देखने को मिलता है।

मुण्डन लोकगीत

मेरीए लाडलिए माता ओ
मामे कट लए सिर दे बाल
मेरेया लाडलेया बेटा ओ
मामीए धम लए गासो गास
मेरीए लाडलिए माता ओ
मामे कट लए सिर दे बाल।[5]

भावार्थ - मुण्डन संस्कार के समय बालक अपनी माँ से कहता है कि मेरी लाड़ली माँ मेरे मामे ने मेरे सिर के बाल को काट दिया है। फिर बालक कि माँ उससे कहती है को जमीन पर गिरने नहीं कि मेरे लाडले बेटा तू फिक्र न कर तेरी मामी ने तेरे बालों दिया है और ऊपर ही (गासो गास) इन्हें रेशमी वस्त्र में थाम लिया है। यह गीत 'कहरवा-ताल के बराबर की ताल में निबद्ध है।

जनेऊ लोकगीत

बेलिया कपाई ओ माता, बेलिया कपाई
छोटा जेया बालक जनेऊ ओ मांगदा
कतीया कपाई ओ मामा, कतीया कपाई
छोटा जेया बालक जनेऊ ओ मांगदा।[6]

भावार्थ- जब बालक का जनेऊ संस्कार किया जाता है तो वह अपनी माँ से पूछता है कि माँ क्या तुने कपास (कपाई) को सही प्रकार से बनुकर (बेलिया) उसका जनेऊ के लिए धागा बनाया है। फिर वह बालक अपने मामा से जनेऊ के लिए धागा मांगते हुए पूछता है कि क्या मामा ने कपास को कातकर उसका धागा बनाया है या नहीं। यह लोकगीत अनिबद्ध रूप से गाया-बजाया जाता है।

मायके वाले

"कोठे चढ़ी चढ़ी त्याण देखदी मेरे प्योके ते कोई आया
देख नी त्याणी आईक तेरे प्योके ते कोई आया।"[7]

अर्थात् जिसके बेटे या बेटी की शादी है वह अपने घर की छत पर चढ़कर देख रही है कि मेरे मायके से या पीहर से कोई आ रहा है।

ससुराल वाले (जहां नानकचारा गया है)

"जे मै जाणदी की मेरे पाईयां औणा में अंगणा लपायी ओ रखदी
जे में जाणदी की मेरियां पाबियां औणा में कुंगुआ मंगाई ओ रखदी।"

इसका अर्थ है कि जिसके घर में शादी है वह बोल रही है की यदि उसे मालूम होता कि उसके भाई आ रहे हैं तो वह अपने आँगन को लिपवा (मिटटी के कच्चे आंगन का समय समय पर गोबर व मिटटी से लेपन किया जाता है) कर रखती अर्थात सुन्दर बना देती और यदि मुझे पता होता कि मेरी भाभियां भी आ रही हैं तो मैं उनके लिए कुमकुम मंगवा कर रखती।

मामा स्वागत गीत

"आया नी आया ओ पैणे बिरन परोणा
दूदे धुलावां ओ तेरे चरणा
जे दर आऊंगा ओ बिरना दिन दपेरे
लोक केंदे ओ बिरना मेरा वे।"[8]

भावार्थ - वर या कन्या पक्ष में जब उनका मामा तोरन लेकर आता है तो वर या कन्या की माँ अपनी सहेलियों से कहती है कि मेरा भाई (बिरन) अतिथि (परौणा) बनकर मेरे घर आया है। इसके सत्कार के लिए मैं अपने भाई के चरण दूध से घुलाऊँगी। अगर भाई दिन के समय मेरे घर आएगा तो सभी लोगों को पता चल जाएगा कि मेरा भाई आज मेरे घर आया है और यह मेरे लिए हर्ष की बात होगी। यह लोकगीत अनिबद्ध रूप में गाया जाता है।

चलो जी मामा जी ओ तोरन गडाईए
सोने मड़ाई ओ मामा तरत (धरत)
काहे दिए धमीया ओ मामेया
काहे दे तोरन
अज तेरे तमें दीया बेला वे
सोने दिया धमीया ओ भाणजे (भाणजिए)
सिम्बला दे तोरन
अज मेरे धर्मे दिया बेला वे।[9]

भावार्थ - विवाहोत्सव के समय वर और कन्या के मामा को सम्बोधित करते हुए कहा गया है कि चलो मामा जी चलकर तोरन को सोने में मढी गई धरती पर गाडते है। भाणजा या भाणजी अपने मामा से पूछती है कि मामा तोरन को पकड़ने वाली लकड़ियाँ और तोरन किस लकड़ी के बने है तो मामा उत्तर में कहता है कि तोरन की नीचे वाली लकडियां सोने की और ऊपर तोरन का भाग 'सिम्बल' नामक लकड़ी से बना है। यह गीत राग भूपाली की छापा को लिए हुए है और अनिबद्ध रूप से गाया जाता है।

तेल गीत

वर या कन्या दोनों पक्षों में 'सोद' वाले दिन उनके परिवार के सदस्यों व उनके ननिहाल पक्ष वालों के द्वारा वर व कन्या को तेलादि लेपन किया जाता है। इससे सम्बन्धित गीत घर तथा कन्या पक्ष में समान रूप से गाया जाता है जो इस प्रकार से है:-

"तेलिया मेलिया तेल पावे, रल मिल मंगल गाइये
नानी सुहागिन तेल पावे, रल मिल मंगल गाइये
मामी सुहागिन तेल पावे, रल मिल मंगल गाड्ये
मासी सुहागिन तेल पावे, रल मिल मंगल गाइये।"[10]

भावार्थ - वर व कन्या पक्ष में जब उनकी नानी के द्वारा तेलादि लेपन किया जाता है तो मंगल गीत गाने की बात की गई है। इसी प्रकार मामी. मासी के द्वारा तेल डालते समय मिलजुलकर मंगल गीत गाए जाते हैं। यह अनिबद्ध प्रकार का गीत है तथा इसमें राग 'बिलाबल' के स्वरों की छाया दिखाई देती है।

विवाह संस्कार

बिलासपुर जिले में वर व कन्या की 'सांद' वाले दिन जब उनके मामा पक्ष के लोग वहाँ आते है तो वर के लिए सेहरा, कपड़े, जुत्ते, और श्रृंगार का अन्य सामान मामा के द्वारा ही लाए जाता है। इसी प्रकार कन्या के विवाह में भी नथ, लिंग चोला. चूड़ा व श्रृंगार का साजो सामान मामा ही लाता है। मामा चाहे कितना भी निर्धन क्यों न हो, इन वस्तुओं का प्रबन्ध उसे अपनी सामर्थ्य के अनुसार करना ही होता है जो कि यहां हमारी प्रचलित नानकचारा परम्परा को दर्शाता है। मामा की ओर से कन्या व वर को दिए गए इस सामान को बहुत शुभ शगुन माना जाता है। इस अवसर पर यहाँ बहुत से लोकगीत गाए जाते हैं जैसे :-

"कपड़े लेके मामा तेरा खड़ेया,
पाणजा तुसीं पैनदे क्यों न,कर दे अड़ियाँ
फौजां तेरियां जाई जम्मु लड़िया
पाणजा तुसी लड्दै क्यों ना, कर दे अड़ियाँ
सेहरा लेके नाना तेरा खडेया।"[11]

भावार्थ - विवाहोत्सव में गाँव की महिलाएँ गाते हुए वर को कहती हैं कि तुम्हारा मामा तुम्हारे लिए वस्त्रादि लेकर आया हुआ है तुम इन्हें पहनते क्यों नहीं हो? तुम नखरे क्यों दिखा रहे हो? यहाँ वर को फौजी बताया गया है और कहा गया है कि तुम्हारी फौज जम्मु में लड़ रही है तुम क्यों नहीं लड़ते हो, नखरे क्यों करते हो। तुम्हारा नाना तुम्हारे लिए सेहरा लेकर आया है। गाँव की स्त्रियां हंसी-मजाक में वर पर व्यंग्य कसती हुई इन लोकगीतों को गाली है जिससे वातावरण हंसी ठिठोली से भर जाता है।

इसी प्रकार बिलासपुर में नानकचारा परंपरा में अनेक प्रकार के लोकगीत गाए जाते हैं जो हमारे संस्कृति की झलक को दिखाते हैं

उपसंहार

लोकगीत भले ही किसी भी क्षेत्र के क्यों न हो वो उस क्षेत्र के समस्त लोक को दर्शाते हैं। हमारी लोक संस्कृति को दशनि का सबसे अच्छा माध्यम लोकगीत ही हैं। जहां एक ओर लोकगीत हमारा मनोरंजन करते हैं वहीं दूसरी ओर हमें अपनी संस्कृति से भी जोड़े रखते हैं। हमारे धार्मिक ग्रंथो के सोलह संस्कारों की बात हो या फिर हमारी मान्यताओं व आवश्यकताओं की सभी हमारे लोकगीत प्रदर्शित करते हैं। इस शोध पत्र में हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिला में नानकचारा परम्परा में गाये जाने वाले लोकगीतों में संस्कृति को दिखाया है। इन संस्कार परम्पराओं का अध्ययन करते हुए मुझे जितनी भी जानकारी मिली है उसके आधार पर मैं यह कह सकता हूँ कि इन परम्पराओं ने जहाँ हमारे संस्कारों व संस्कृति को जीवन्त बनाया है वहीं इन्हें सुरक्षित भी रखा है।

संदर्भ

1. कमलकृष्ण, हिमाचल प्रदेश का लोक साहित्य लोक कथाओं के परिप्रेक्ष्य में पृ० 9
2. डॉ० जय नारायण कौशिक हरियाणवी हिन्दी कोश, पृ० 474
3. देवराज गोविन्द, मृदंग तबला वादन सुबोध, भाग-2 पृ० 5
4. सुदर्शन वशिष्ट : हिमाचल के लोकगीत (हिमालय गाथा), अमर सत्य प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 2021, पृष्ठ 303
5. मौखिक वाचन का लिखित रूप (सविता देवी गाँव कोठी जिला- बिलासपुर)
6. मौखिक वाचन का लिखित रूप (हरि राम शर्मा , गांव दयोथ जिला- बिलासपुर)
7. पवना शर्मा : हिमाचल प्रदेश के लोकगीतों में लोक संस्कृति की झलक, 2024 अंक 53
8. मौखिक वाचन का लिखित रूप (अभिषेक शर्मा, गांव समोह, जिला- बिलासपुर)
9. मौखिक वाचन का लिखित रूप (जानकी देवी गाँव कोठी जिला- बिलासपुर)
10. डॉ० रामस्वरूप शांडिलः हिमाचल प्रदेश के लोकसंगीत की परम्पराएँ, पृ० 62-63
11. संजीव कुमार, बिलासपुरी विवाह गीतों का अध्ययन, पृ० 79